دسمبر ۲۰۰۷ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰہُ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی
قَدْ جَآءَکُمْ مِّنَ اللّٰہِ نُوْرٌ وَّ کِتٰبٌ مُّبِیْنٌ
بیشک اللہ کی طرف سے تمہارے پاس نور آیا ہے اور روشن کتاب





مؤسسۂ نور ہدایت حسینیۂ غفران مآبؒ لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

SHUA-E-AMAL

Lucknow

December 2007

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका
लखनऊ





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk
LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA
Phone : 2252230

वर्ष–4

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक – 6

माह दिसम्बर – 2007 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल

''लखनऊ''

संरक्षक

मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहिब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

वार्षिक – 200 रु

मिलने का पता

क़ीमत – 20 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

website: www.noorehidayat.com
e-mail: noorehidayat@yahoo.com — noorehidayat@gmail.com

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

मुसलेहे आज़म हज़रत अली (अ0)

हकीमुल उम्मत अल्लामा हिन्दी आयतुल्लाह सैय्यद अहमद ताबा सराह

अरब के जाहिलियत के ज़माने के बिगड़े हुए अख़लाक़ जिनको रसूल (स0) ज़ाहिरी तौर पर सुधार गये थे उनकी वफ़ात पर वही बद्वियत व जिहालत मुसलमानों में लौटने लगी बदवी और सहराई क़ानून फिर से ढके पर्दों में चलने शुरु हुए, क़बाएली और नसली इम्तियाज़ात सामने आना शुरु हो गये, माले ग़नीमत की तक़सीम में इम्तियाज़ात और ओहदे व मन्सब में इम्तियाज़ात, बैतुलमाल से ख़लीफा और ख़लीफा ज़ादियों की तनख़्वाहें मुक़र्रर होना शुरु हो गईं रिश्तेदारों के लिए मुसलमानों के माल वक़्फ़ हो गए सरमायादारी व मुल्कगीरी का न ख़त्म होने वाला सिलसिला शुरु हो गया। अली बिन अबी तालिब (अ0) अगर ऐसे नाजुक वक़्त में तलवार उठाते तो बेशक उन जनाब का अन्देशा क़ौम के एलानिया फिर जाने का अमली जामा पहन लेता और ज़ाहिरी इस्लाम भी छोड़ बैठते ज़िद और हिट से कुर्आन व सीरते रसूल की बिना मतलब ज़ाहिर ब ज़ाहिर मुख़ालेफत करते और अली (अ0) को रास्ते की रुकावट समझकर और औलादे रसूल (स0) को भी असहाबे रसूल क़त्ल करके रसूल (स0) की उन हदीसों का मिस्दाक़ खुल्लमखुल्ला बन जाते जो अली (अ0) और औलादे अली के क़ातिलों और तकलीफ देने वालों के बारे में बहुत ज़्यादा मौजूद हैं। अलावा इसके नौ मुस्लिम ख़िलाफती जंग को दुनियावी जंग और नुबुव्वत व इमामत को दुनियादारी का ढकोसला समझ कर पिछले मज़हबों पर लौट जाते और मुसलेहे आज़म ने कुर्आन व सीरते रसूल (स0) को हाथ में लेकर बात से और काम से अपनी ज़ात को पेश करके इस्लाम को बचा लिया और क़ौम के ज़ाहिरी इस्लाम के रास्ते में आकर खुल्लमखुल्ला इस्लाम से न हटने दिया जाए और सब कुछ होते देखा और एहतेजाज के तौर पर और भलाई फैलाने में कोई झगड़ा नहीं किया यहाँ तक कि दरबारे अलवी में जब अमीरे मुआविया की सियासी चालों का ज़िक्र आया तो साफ–साफ फरमा दियाः अगर तक़वा और परहेज़गारी और ख़ुदा का ख़ौफ न होता तो मैं अरब में बेपनाह चालाक इन्सान होता।

अली (अ0) ने हाकिम व महकूम बनकर हक़ीक़ी सियासत का इन चन्द जुमलों में मतलब समझा दिया। चालाकी, मक्कारी, हीला साज़ी, अह्कामे इलाही से भागने का नाम अगर सियासत है तो वह शख़्स क़ौमों का नस्ल दर नस्ल मुजरिम है, वतन का मुजरिम है, तहज़ीब व अख़लाक़ का मुजरिम है, ख़ुदा का मुजरिम है, आज आलम के सियासतदानों के बारे में दुनिया के ख़ुले हुए फतवे मौजूद हैं। ख़ुद सियासी लोगों के हाथ पैर और इसी मशीन के कल पुरज़े, तक़रीरों, तहरीरों में इन लानती कारगुज़ारियों को ख़ुद छुपाते रहते हैं। क्या कहना उस अलवी सियासत का जिस की बुनियाद तक़वा हो।

□□□

इस्लामी भाईचारगी

इमादुल उलमा अल्लामा सै0 मुहम्मद रज़ी साहिब क़िब्ला मुजतहिद

इस्लामी भाईचारगी व बिरादरी ही मुसलमानों की तरक़्क़ी, ख़ुशहाली और मज़बूती की सबसे बड़ी और सबसे ज़्यादा अहम बुनियाद है। हिजरत से पहले मक्का में भी यही भाईचारगी और एकता मुसलमानों का अपने दुश्मनों के मुक़ाबले में सबसे ज़्यादा असरदार हथियार था और जब हिजरत के बाद हुज़ूरे अनवर (स०) और तमाम मुसलमान मदीने में आ गए तो यहाँ भी इसी भाईचारगी ने उनकी ज़िन्दगी और तरक़्क़ी में सबसे बड़ा किरदार अदा किया।

कौन नहीं जानता कि बेअ्सते सरवरे काएनात (स०) से पहले इन्सानी जान व माल की कोई भी क़ीमत नहीं थी। एक क़बीला दूसरे क़बीले से लड़ाई पर आमादा था, एक आदमी अपनी दूसरे इन्सानी भाई का गला काटने और उसका ख़ून बहाने के लिए तैयार रहता था। ख़ून–ख़राबा और लूटमार की वजह से अरब का चप्पा–चप्पा बदअमनी का केन्द्र बन गया था। सरदारी और हुकूमत सिर्फ उसी को मिलती थी जिसके बाजुओं में ताक़त और हाथ में तलवार थी। मज़लूम और बेबस लोगों की क़िस्मत में बर्बादी और गुलामी के सिवा कुछ न था।

सरवरे काएनात (स०) ने इस्लामी भाईचारगी का एलान करके लोगों को बताया कि हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है चाहे वह ग़रीब हो या अमीर हो, गुलाम हो या आक़ा हो, हाकिम हो या महकूम हो। यही वह इलाही पैग़ाम था जो हुज़ूरे अनवर (स०) के ज़रिए से इन्सानों तक पहुँचाया गया था और कुर्आने हकीम ने इन लफ़्ज़ों में बयान किया था:

अनुवाद– ''ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो जिस तरह ही डरने का हक़ है और तुम्हे मौत न आए मगर ऐसी हालत में कि तुम सच्चे मुसलमान हो और देखो तुम सब के सब मिल कर इलाही रिश्ते को मज़बूती से थामे रहो और आपस में टुकड़े–टुकड़े न हो जाओ और तुम अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद रखो कि तुम आपस में एक दूसरे के दुश्मन थे मगर यह अल्लाह ही की ज़ात है जिसने तुम्हारे दिलों को आपस में जोड़ दिया फिर तो तुम सब आपस में भाई–भाई बन गए।''

इसी तरह सूरए अनफाल आयत न0 46 में अल्लाह का इरशाद है:

अनुवाद– ''मुसलमानों! तुम आपस में झगड़े न करों यानी भरपूर इत्तेहाद और नज़्म व ज़ब्त के साथ ज़िन्दगी बसर करो क्योंकि अगर तुम में इत्तेहाद न रहा और आपस में झगड़ते रहे तो हिम्मत हार जाओगे और और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी।''

इसी तरह सूरए हुजरात आयत न0 10 में है:

अनुवाद– ईमान वाले तो आपस में एक दूसरे के भाई हैं तो अपने दो भाईयों के दरमियान मेलजोल करा दिया करो और अल्लाह से डरते रहो तो कि तुम पर रहम किया जाए।''

इसी भाईचारगी व इत्तेहाद ने इन बे सरोसामान, ग़रीब व बेसहारा और बेयार व मददगार मुसलमानों को जिनके पास न तो दौलत ही थी और न ज़िन्दगी गुज़ारने का सामान, न उनके पास अपने दुश्मनों से बचने के लिए सामाने जंग था और न लोगों की ताक़त थी, कुछ ही दिन में दुनिया की बड़ी भारी सलतनतों और बाक़ायदा फौजों के लिए ना क़ाबिल तसख़ीर (जिन पर दुश्मन क़ब्ज़ा न पा सके) बना दिया था। इसी भाईचारगी ने मुसलमानों के अन्दुरूनी तमाम झगड़े मिटा डाले और बदतरीन दुश्मनों को बेहतरीन दोस्तों मे बदल दिया और इस दीनी भाईचारगी के रिश्ते को ख़ानदानी और ख़ूनी रिश्तों से ज़्यादा मज़बूत बना दिया। नज़र से नज़र मिली, क़दम से क़दम मिले और दिल से दिल मिल गए। फारसी की मिसाल हैः दो दिल अगर एक होकर मुत्तहिद हो जाएँ तो बड़े से बड़े पहाड़ भी उनके सामने थम नहीं सकते।

सरवरे काएनात ने जिस इत्तेहाद की तालीम दी थी वह सिर्फ ज़बानी इत्तेहाद न था, व अज़्म व इरादे का इत्तेहाद था। लिबास और रंग, ज़बान और जगह का इत्तेहाद न था बल्कि वह दिलों और रूहों का इत्तेहाद था। वह अल्लाह की बन्दगी और दीनी बराबरी का इत्तेहाद था जिसकी बदौलत मदीने के कुछ मुसलमान भूखे मज़दूरों और किसानों के क़दमों के सामने कुछ ही रोज़ में क़ैसर व किसरा के ताज लुटते नज़र आने लगे। इसी इत्तेहादी जज़्बे ने हाकिम व महकूम का फर्क़ मिटा दिया और सबको एक ही सफ में ला कर खड़ा कर दिया। मालदारों और अमीरों के दिलों में ग़रीबों के दुख दर्द का एहसास पैदा हुआ और साथ ही ग़रीबों और गुलामों के दिलों में अमीरों और आक़ाओं की मुहब्बत भी उभरने लगी क्योंकि इस्लाम ने इस तरह के तमाम तफरक़ों को सिर्फ ऊपर से ही नहीं जड़ से उखाड़ दिया था। हिजरत के बाद हुज़ूरे अनवर (स०) ने मदीने में आते ही मुसलमानों को जिस बात की सबसे पहले तालीम दी थी वह यही आपस का इत्तेहाद व इत्तेफाक़ था। आपने मुहाजिरीन व अन्सार में से हर एक को दूसरे का भाई बना दिया जिसके बाद मदीने के अन्सार की यह हालत हुई कि उन्होंने मुहाजिरीन यानी अपने उन दीनी और इस्लामी भाईयों को अपनी मीरास में और अपनी जायदादों में भी शरीक बना लिया और अपनी कोई बड़ी से बड़ी क़ीमती चीज़ भी अपने उन दीनी भाईयों से अज़ीज़ न की और यही हालत ख़ुद मुहाजेरीन की भी थी कि वह अपनी अन्सारी भाईयों के पसीने पर अपना ख़ून तक बहा देने के लिए तैयार रहा करते थे। काश आज भी हम अपने इस चमकते हुए और रौशन माज़ी (गुज़रे हुए ज़माने) की एक झलक का भी तसव्वुर कर सकें तो हमारी सारी मुश्किलें एक लम्हें में ख़त्म हो जाएँ।

सरवरे काएनात (स०) ने हमेशा क़ुर्आन के इरशादात और ख़ुद अपनी मुबारक हदीसों और सीरते तैयिबा से बाहमी इत्तेहाद और एकता और इत्तेफाक़ व मुहब्बत की तालीम दी जिसकी मिसाल दुनिया की किसी दूसरी क़ौम और उसके सरबराहों की ज़िन्दगी और तालीमात में नहीं मिलती। यह बेशक उसी इत्तेफाक़ और बाहमी मुहब्बत का नतीजा था कि मुसलमानों की शुरुआती शहरी ज़िन्दगी में उनकी तादाद की ज़बरदस्त कमी, ग़रीबी और बेचारगी, बे सरोसामानी और तमाम दुनियावी चीज़ों से महरूमी के बावजूद उनके ख़ुद्दार सरों और ताअते ख़ुदा व रसूल (स०) से भरे हुए दिलों को बातिल की बड़ी से बड़ी क़ुव्वतें भी अपने सामने न झुका सकीं और ख़ून,

मौत और तबाही व बर्बादी के हौलनाक तूफ़ान भी उन हक़ परस्तों के क़दमों में गुलामी की ज़न्जीरें न डाल सके। इस्लाम दुश्मन ताक़तें पूरी तरह जानती हैं कि मुसलमानों का नाक़ाबिले तस्ख़ीर (जिस पर दुश्मन क़ब्ज़ा न पा सके) हथियार हमेशा उनका बाहमी इत्तेफाक़ और उनकी भाईचारगी ही रही है इसलिए उनकी भरपूर कोशिश यही होती है कि वह इस भाईचारगी और बिरादरी के रिश्तों को टुकड़े–टुकड़े करके उनमें अफरातफरी और फूट डाल दें। तो फिर मुसलमानों पर किसी बाहरी हमले की ज़रूरत ही बाक़ी न रहेगी बल्कि ख़ुद ही अपनी मौत मर जाएँगे। हमें हालात का गहरी नज़र से मुताला (Study) करना चाहिए। हमारे माज़ी और हमारी पिछली तारीख़ ने हमें बहुत कुछ बता दिया है जिससे हमें अपनी उलझनें और मुश्किलें दूर करने में बहुत बड़ी मदद मिल सकती है और हम आसानी के साथ समझ सकते हैं कि किस चीज़ में हमारी ज़िन्दगी और तरक़्क़ी है और किस बात में तबाही व बर्बादी है लेकिन अगर हमने अपने शानदार माज़ी को भुला दिया और ज़ाती व इन्फेरादी मक़सदों पर इस्लामी भाईचारगी के तक़ाज़ों को भूल गए तो फिर हम इसके हौलनाक और तबाही वाले नतीजों के लिए भी पूरी तरह तैयार रहें जिन्हें हम किसी हालत में भी रोक न सकेंगे इसके साथ ही हमें यह भी याद रखना चाहिए कि दो मुसलमान आदमी जब आपस के इख़्तेलाफ दूर करने के लिए बैठते हैं और वह दिल से उस काम का बीड़ा उठाते हैं कि अब हम सच्ची भाईचारगी का सुबूत देंगे तो फिर उनके सामने न तो कोई शर्त व क़ैद हुआ करती है और न कोई क़ानून होता है जिसकी पाबन्दी के बग़ैर आपसी भाईचारगी व बिरादरी वजूद में न आ सके।

उनके सामने सिर्फ एक ही क़ानून और सिर्फ एक ही चीज़ होती है और वह है इस्लामी भाईचारगी, और उसकी हदें सिर्फ वही होती हैं जिन्हें अल्लाह की किताब और सुन्नते रसूल (स॰) ने बता दिया है। इन हदों की पाबन्दी करते हुए भाईचारगी का भरपूर और बिला क़ैद व शर्त मुज़ाहेरा इस्लाम की अस्ली रूह और मुसलमान की हक़ीक़ी ज़िन्दगी है।

सरवरे अम्बिया (स॰) की मुबारक हदीसों का ख़ुलासा यह है कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का हक़ीक़ी भाई है। असली मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान की इज़्ज़त व आबरू और जान व माल महफ़ूज़ रहे, हर मुसलमान की इज़्ज़त और जान व माल हज के दिन और पाक काबा की तरह मोहतरम है।

इस्लाम के बदतरीन दुश्मन मुसलमानों को आपस में लड़ाना चाहते हैं। हमें उनसे होशियार रहना चाहिए और उनके इस ज़लील मक़सद को कामियाब न होने देना चाहिए। हमारी फूट और ना इत्तेफाक़ी इस्लाम दुश्मन ताक़तों की गहरी साज़िश का नतीजा है। आपस में ख़यालात का लेनदेन वह किसी भी तरह का हो मुहब्बत व ख़ुलूस और सच्चे बिरादराना जज़्बात के साथ होना चाहिए। राय का इख़्तेलाफ मज़हबी हो या सियासी, इज्तेमाई हो या निजी और ज़ाती इसमें हर सूरत में हुदूदे इलाहिया की ख़िलाफवर्ज़ी करना और उन्हें तोड़ना फरमाने ख़ुदा की तौहीन व तहक़ीर है जिसके जवाज़ का एक सच्चे मुसलमान के लिए तसव्वुर भी नही किया जा सकता।

इस्लाम, मुहब्बत व भाईचारगी का दीन है वह ना इत्तेफाक़ी, फूट और दुश्मनी व नफरत की तालीम नहीं देता। □□□

एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहिब क़िब्ला ताबा सराह

पिछले शुमारे से आगे

दायमी मोजिज़ा यानी हमेशा रहने वाला चमत्कार

वक़्ती चमत्कारों के अलावा हमारे पैग़म्बर (स0) को हमेशा बाक़ी रहने वाला चमत्कार भी दिया गया जिसका नाम ''क़ुर्आन'' है। यही हमारे पैग़म्बर (स0) और दूसरे पैग़म्बरों के बीच इम्तियाज़ और विशेषता है, कारण इसका यह है कि और पैग़म्बरों की शरीअतें यानी धर्मविधियाँ एक मुद्दत, अवधि विशेष के बाद समाप्त हो जाने वाली थीं और हमारे पैग़म्बर (स0) की शरीअत चूँकि क़यामत तक रहने वाली है इसलिए एक सदाबहार चमत्कार की भी ज़रूरत थी जो क़ुर्आन के रूप में सदाबहार चमत्कार की हैसियत से हमारे पैग़म्बर (स0) को दे दिया गया।

क़ुर्आन मजीद एक ही नही अनेक रूपों में चमत्कार है जिसमें से एक पहलू उसकी फ़साहत और बलाग़त है अर्थात् एक पक्ष उसका वाक् कौशल है। चूँकि चमत्कार में यह विशेषता दृष्टिगत रखी जाती है कि वह ऐसा हो जिसको उस ज़माने के लोग परख सकें अतएव जिस युग में जिस कला में लोग बहुत दक्ष या माहिर होते हैं, उसी से मिलता जुलता चमत्कार भी दिया जाता है जैसे हज़रत मूसा के ज़माने में जादू–टोने का बहुत ज़ोर था। इसलिये हज़रत मूसा को इससे मिलता जुलता चमत्कार दिया। हज़रत ईसा के ज़माने में तिबाबत (आयुर्विज्ञान) का दौर दौरा था इसलिए आपको इसके अनुरूप चमत्कार प्रदान हुआ। हमारे पैग़म्बर (स0) जिस युग में हुए उस वक़्त अरबों को किसी कला में भी कमाल हासिल नहीं था। उस युग को जिहालत का दौर, अज्ञान का युग कहा जाता था। बस वह अपनी वाक्पटुता पर वाग्मिता पर गर्व करते थे उन्हें अपनी भाषा ज्ञान पर इतना घमण्ड था कि दूसरों को गूँगा बताते थे, उनके गौरवशाली कवि जनसाधारण से मिलना पसन्द न करते थे कि कहीं ज़बान ख़राब न हो जाये इसलिये हज़रत (स0) को चमत्कार भी वाक्पटुता और वाग्मिता दिया गया। अगर क़ुर्आन इस दृष्टि से चमत्कार न होता तो निरन्तर ललकारने, अनेक आयतों में क़ुर्आन का जवाब लाने की माँग, पूरी किताब का न सही 10 सूरों का, 10 का भी न सही एक ही का जवाब लाने का बुलावा देने के बाद भी वह कभी चुप न रहते। यह उनकी ज़बाँदानी, (भाषा विद्वता) पर कितनी भरपूर चोट है, कैसी ज़बरदस्त चुनौती है, क्या अरब के वाग्मी तड़प के न रह गये होंगे

खुली बात है कि उनको अपना धर्म भी प्रिय था, बुत भी प्यारे थे, अपनी सभ्यता और समाज से भी मुहब्बत थी। इस्लाम उनकी पूरी ज़िन्दगी को उलटपलट के रख देना चाहता था जिसका उन्होनें हर तरह मुक़ाबला करना चाहा, उनके बचाने के लिये जान तक दे दी इसलिये अगर उनके बस में होता कि वह क़ुर्आन का जवाब लायें तो बद्र, ओहद, ख़न्दक़, ख़ैबर और हुनैन के *''ग़ज़वे''* और बहुत से *''सराया''* न

होते। एक ही ''सूरा'' ले आते तो नबी (स0) का दावा खण्डित हो जाता। अगरचे कुर्आन की फसाहत और बलाग़त का दर्जा समझना अन्य जातियों के लिये सम्भव नहीं परन्तु हर फन के माहिरों, हर कला में निपुण लोगों का किसी कला के बारे में कोई फैसला दूसरों के लिये हुज्जत (अकाट्य प्रमाण) हुआ करता है तो जिस तरह साहिरों का जनाब मूसा के असा (लाठी या सोंटा) के बारे में यह फैसला कि वह जादू नहीं चमत्कार है, दूसरों के लिये अकाट्य प्रमाण है। उसी तरह अरब के वाकपटु लोगों का मान लेना और ग़ैर अरब लोगों के लिये चमत्कार होने की दलील है, तर्क है।

कुर्आन के चमत्कार होने के दूसरे पहलू

कुर्आने मजीद सिर्फ वाक् कौशल के लिहाज़ से चमत्कार नहीं, चमत्कारिता के ऐसे पहलू भी पाये जाते हैं जिनके कारण ग़ैर अरब भी सर झुका दें। सर्वज्ञाता अल्लाह जानता था कि भूमण्डल पर बसने वाले इन्सान एक ज़माने में अपनी इल्मी तरक़्क़ियों, सक़ाफ़त में बढ़ते हुए क़दमों से फितरत की उलझी हुई गुत्थियों के सुलझाने और रोज़–रोज़ की तहक़ीक़ पर नाज़ करता होगा यानी अपने शास्त्रीय, प्रगति, संस्कृति के क्षेत्र में बढ़ते हुए चरण, नैसर्ग की उलझी हुई गुत्थियों के सुलझाने और नित्य दिन बढ़ रहे अनुसन्धान पर गर्व करेगा। इसलिए आवश्यकता थी कि अन्तिम पैग़म्बर (स0) को जो चमत्कार दिया जाए उसका शास्त्रीय पक्ष भी इतना ऊँचा हो कि विकसित जगत को भी आश्चर्य में डाल के कुर्आन की महानताओं के सामने सर झुकाने पर विवश कर दे। यह बात समझ लेना चाहिए कि चमत्कार का मतलब यह नहीं कि जो बात पैग़म्बर अपने दावे के सुबूत में पेश करे वह ऐसा हो जिसे कोई किसी प्रकार अंजाम न दे सकता हो बल्कि वह काम ऐसा होना चाहिए कि सामान्य कारणों से जिस तरह सामान्य रूप में नतीजे पाये हैं, उनसे वह अलग हो। उसके ऐसे अनोखे कारण हों जो इंसानी तरीक़ों से परे हरि इच्छा (इलाही इरादे) के पाबन्द हों। मिसाल के तौर पर अगर हज़रत इब्राहीम का चमत्कार बस यह होता कि आग में सुरक्षित रहें, हज़रत मूसा का चमत्कार बस यह होता कि नदी के पानी को रोक दिया, हज़रत सुलेमान का चमत्कार मात्र हवा पर बुलन्द होना और जनाब ईसा के पैग़म्बर होने का प्रमाण सफ़ेद दाग़ और कोढ़ के रोगियों को अच्छा करना होता तो आज अग्निसिंह (Fire proof) कपड़ों की ईजाद, नदियों पर बड़े–बड़े बाँध, हवा में उड़ते हुए जहाज़, सफेद दाग़ और कोढ़ की दवाएँ, कुछ मुर्दों का फिर से ज़िन्दा कर लिया जाना, पहले के पैग़म्बरों के चमत्कारों को खण्डित कर देता मगर अन्तर यही है कि ऊपर लिखी तमाम बातें ऐसे कारणों से प्राप्त की गयी हैं, जो समझ में आने वाली हैं और जिसके पास वह कारण उपलब्ध हो जायें उसके बस में है और पैग़म्बरों के चमत्कार आलों और दवाओं के ज़रिये अंजाम नहीं पाते थे, इसीलिये वह आज भी चमत्कार हैं।

इसी तरह आज की बहुत सी मान्यताएँ जो प्रयोगशालाओं (Laboratory) में जाँच पड़ताल के बाद दूरबीनों से देख के मुद्दतों के शोध अनुसन्धानों द्वारा प्राप्त की गयी हैं और इतनी आम हो गयी हैं कि बच्चे भी जानते हैं लेकिन यही बातें कुछ सदियों पहले इन्सान की पहुँच से बाहर और विचार से परे थीं आज से चौदह सौ

साल पहले कोई ऐसा व्यक्ति जिसका पालन पोषण घोर अज्ञान के युग में हुवा हो, जिसने किसी से अक्षर भी न सीखे हों, इन सच्चाईयों का अनावरण (इन्किशाफ) जिन तक पहुँच सैकड़ों बरस के बाद भी न मालूम कितने विद्वानों और अनुसन्धानकर्ताओं के पसीना बहाने के नतीजे में हुई है तो क्या यह बात आदत और सामान्य नियम के विरूद्ध चमत्कार नहीं होगी। हम कुछ ऐसे ही शास्त्रीय चमत्कार नमूने के तौर पर पेश करते हैं।

1– क़ुर्आन और आकर्षण एक प्रतिकर्षण नियम (क़ानूने जाज़िबा व दाफ़िआ)

आज तो आम लोग भी जानते हैं कि इस लम्बे चौड़े वातावरण में अरबों सौरमण्डल और बहुत सी आकाश गंगाएँ और दूसरे खगोलीय पिण्ड (Celestial Boby) दो प्रकार की शक्तियों के सन्तुलन के आधार पर, नपी तुली चाल से अपनी–अपनी धुरियों पर अपने केन्द्रों के गिर्द चक्कर काट रहे हैं। एक आकर्षण शक्ति है जो केन्द्र में पायी जाती है और एक प्रतिकर्षण शक्ति है जो चक्कर काटने वाले अंशों में पायी जाती है। एक शक्ति ज़्यादा दूर भागने नहीं देती और दूसरी शक्ति एक दूसरे में विलीन हो जाने से बचाती है और आश्चर्यजनक बात यह है कि यही आकर्षण प्रतिकर्षण व्यवस्था (निज़ामे जज़्ब व दफअ्) अगर बड़ी से बड़ी आकाश गंगाओं (कहकशाओं) में पायी जाती है जिसके एक सितारे का प्रकाश दूसरे सितारे तक हज़ारों प्रकाश वर्ष (नूरी साल) में पहुँचता है तो छोटे से छोटे एटमी कणों में भी यही व्यवस्था कार्यरत है। मगर इन शक्तियों का अनावरण इस युग की बात है, चौदह सौ बरस पहले वाले और भी अरब के अज्ञान काल में पलने वाले, इसको क्या जानते। मगर क़ुर्आन मजीद ने कितने प्यारे ढंग से इस व्यवस्था की ओर इशारा किया है।

''अल्लाह ही वह है जिसने आसमानों को बलन्दियाँ प्रदान कीं, ऐसे स्तम्भों के बिना जो तुम्हें नज़र आ सके।''

''और आसमान बनाये ऐसे स्तम्भ के बिना जिनको तुम देख सको।''

मुलाहेज़ा फरमाइये इन दोनों आयतों में यह नहीं है कि आसमान अपनी बलन्दियों पर स्तम्भ बिना रुके हुए हैं बल्कि फ़रमाया यह जा रहा है कि ऐसे स्तम्भ नहीं है जो तुम्हें नज़र आ सकें। यह प्रतिबन्ध यह बताता है कि सुतून (स्तम्भ) है मगर ऐसे जो दिखें नहीं। इन आयतों में ''अम्द'' का शब्द आया है जिसके माने हैं, वह जिस पर भरोसा हो, जो संभाले हो। स्तम्भों को अम्द इसीलिये कहते हैं कि वह छतों को संभाले होते हैं। इसीलिये उन विद्युत तरंगों (बरक़ी लहरों) और वह आकर्षण–प्रतिकर्षण शक्ति जो तारों और आकाश गंगाओं को अपनी जगह रोके हुए है, न देखे जाने वाले स्तम्भ मानेंगे। हदीस ने मतलब को और ज़्यादा खोल दिया। अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ0) से रिवायत है–

''यह जो आसमानों में तारे हैं यह भी ज़मीन की तरह नगर हैं जो एक दूसरे से प्रकाश स्तम्भों द्वारा जुड़े हुए हैं''

(जारी)

आज के दौर में हज़रत अली (अ0) के तालीमात की अहमियत

मौलाना डाक्टर मुहम्मद वारिस हसन नक़वी साहिब क़िब्ला इब्ने ख़तीबे आज़म

अगर यह मौज़ू मुझे तारीख़े इन्सानी की किसी और शख़सियत के मुताल्लिक़ दिया जाता तो मैं कहता कि हर ज़माना और दौर अपने वाक़ेआत, अपनी मुशकिलात और अपनी शख़सियत में अकेला है। चूँकि पिछले दौर का हर ज़माना और इसकी इल्मी सतह एक जैसी नहीं है। इसलिए उसके अफ्कार और उनके अरबाबे फिक्र व नज़र के तालीमात भी बदलते रहते हैं। एक अहद का "इन्साने कामिल" जब दूसरे अहद पर परखा गया तो वह इतना कामिल न निकला जितना इसे ख़ुद इसके अहद के लोग समझते थे। यही हाल तमाम तालीमाते बशरी का है जहाँ हर नज़रिया और हर क़ानून माहौल के तक़ाज़ों और दर्जा बदर्जा इल्मी निशो नुमा की पैदावार है। फ़लसफा व अख़लाक़ियात का मुताला कीजिये तो आप मुलाहेज़ा फरमाएँगे के एक ज़माने के मुहकमात दूसरे ज़माने के लिए मुताशाबेहात की शक्ल इख़्तियार करते रहते हैं और एक अहद का मुअल्लिम और उसके तालीमात दूसरे अहद के मुबस्सिर और नक़्क़ाद की नज़र में इतने क़ाबिले तारीफ व तक़लीद नहीं जिस तरह वह उस वक़्त तक समझे और माने जाते थे। मगर यह अगर एक कुल्लिया (क़ानून) है तो इसमें मुस्तसनियात (Exception) भी हैं।

और इन मुस्तसनियात (Exception) में अली (अ0) हैं। उनकी तालीमात कुछ ऐसी है जो हर ज़माने के लिए रास्ता बताने वाली साबित होती रही हैं।

रसूले इस्लाम (स0) के बाद इस्लाम के इख़्तेलाफात पैदा हुए नज़रियात व अक़ाएद में बिगाड़ सामने आया लेकिन यह इख़्तेलाफात अवाम को अली (अ0) की शख़सियत और उनके तालीमात से हटा न सके। अली (अ0) वह थे जिन्हें आलमगीर इस्लामी दौलत की सरबराही 35 हि0 से 40 हि0 तक हासिल रही इसलिए वह तमाम के तमाम इस्लामी फिरक़ों के लिए पहले इमाम और चौथे ख़लीफा की हैसियत रखते हैं। वह इमाम और वह ख़लीफा जिसकी तालीमात पर ध्यान देना दीनी व मज़हबी फर्ज़ है। मगर क्या इन तालीमात पर ध्यान देना दीनी व मज़हबी फर्ज़ इसलिए बना कि अली ख़िलाफत के ओहदे पर फाएज़ हुए? नहीं, बक़ौल इमाम अहमद बिन हम्बलः "ख़िलाफत ने अली को ज़ीनत नहीं बख़्शी थी बल्कि अली ने ख़िलाफत को ज़ीनत बख़्शी थी।" शिया और मुअ्तज़िला (जो उलमाए अहले सुन्नत में शुमार किये जाते हैं) असहाबे नबी में उन्हें सबसे अफज़ल क़रार देते हैं चूँकि अली वह थे जिनकी पेशानी कभी किसी बुत के सामने नहीं झुकी थी। अली (अ0) वह थे जिन्होंने आग़ोशे रसूल (स0) में परवरिश पाई थी, अली (अ0) वह थे जो पैग़म्बरे इस्लाम के सगे चचा के बेटे भी थे और उनके दामाद भी। अली (अ0) वह थे जिनकी तलवार ने बद्र, ओहद, ख़न्दक़ और ख़ैबर की लड़ाइयों में यूँ हिस्सा लिया था कि कामियाबी और जीत इस्लाम की अकेली ज़िम्मेदार बन गई थी। अली (अ0) वह थे जिनकी जिस्मानी ताक़त

की गूँज हमारे ज़माने तक पहुँची है जबकि हर पहलवान जो कुश्ती के लिए अखाड़े में उतरता है तो या अली (अ0) कहता हुआ उतरता है। और जिनकी रूहानी ताक़त की बाज़गश्त आप उन सूफियाए केराम के तालीमात में पाएँगे जो दुनिया के गोशों–गोशों में फैल गये और उनमें से कुछ हिन्दुस्तान में हमेशा–हमेशा के लिए आबाद हो गये जैसे निज़ामुद्दीन और ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती। इमाम शाफई की मशहूर व मारूफ रुबाई बहुत से घरों के लिए घर की सजावट है वह रुबाई जिसमें इमाम शाफई फरमाते हैं:

''अली (अ0) वह हैं जिनकी मुहब्बत आख़िरत के लिए ढाल है। जो जन्नत और दोज़ख़ के बाटने वाले हैं। यक़ीनन वह मुस्तफा के वसी हैं। और इन्सानों और जिनों (दोनों) के लिए इमाम हैं।''

मिर्ज़ा ग़ालिब शायर थे और हिन्दुस्तान के मशहूर शायर लेकिन वह मुजतहिद न थे मगर अली (अ0) की मुहब्बत ने उनके दिल में जोश और वलवले पैदा किये थे कि उन्होंने फतवा देने से गुरेज़ न किया और फरमाया:

ग़ालिब नदीमे दोस्त से आती है बुए दोस्त
मशगूले हक़ हूँ बन्दगी–ए– बू तुराब में

यह तो थी शख़सियत और उसके असरात जो मुख़्तलिफ ज़बानों के जानकार और फनकार लोगों पर पड़े हैं। मगर यह कि अली (अ0) की तालीमात किस तरह हमारे ज़माने से लगाव रख सकती हैं वह सवाल है जिसका जवाब ''नह्जुल बलाग़ह'' के मुफस्सिरीन ने अपने–अपने ज़मानों में दिया है। लेकिन मुझ इजाज़त दीजिये कि मैं एक नया रास्ता इख़्तियार करूँ। एक लम्हे के लिए अली (अ0) की तरफ देखने के बजाए अपने ज़माने की तरफ देखूँ।

मेरे ज़माने और मेरे मुहीत में जो लोग हुकूमत हासिल करना चाहते हैं वह अक्सर मज़हबी जज़्बात और अवाम की जाहिलियत से फायदा उठाने से शुरुआत करते हैं। हाल ही में हमने देखा कभी ''मन्दिर'' के बारे में क़यामत ख़ेज़ ख़िताबत से और कभी ''मस्जिद'' के बारे में घनगरज से, इस दुनिया परस्ती और ख़्वाहिशाते नफ्सानी की पूजा के सिलसिले में हज़ारों बेगुनाहों का अगर ख़ून बह जाए तो हुकूमत पसन्दों को ज़र्रा बराबर परवाह नहीं होती, अगर मुल्क का एक हाथ दूसरे हाथ को काट दे तो उन्हें दुख नहीं होता। वह नहीं देखते कि उनकी कुर्सी वज़ारते मुल्क के कराहते हुए बदन पर रखी हुई है अब ऐसी सूरतेहाल में देखिये कि अली (अ0) की तालीम क्या हो सकती है।

जब रबीउल अव्वल 11 हि0 में पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ने दुनिया छोड़ी तो अली (अ0) को उनकी जगह पर बैठने के तमाम हुक़ूक़ हासिल थे। अस्हाबे रसूल (स0) में वह सबसे ज़्यादा आलिम और सबसे बहेतर मुक़र्रिर थे लेकिन इसके बावजूद क़ुरैश और कुछ अस्हाब ने अबुबक्र को ख़लीफा चुन लिया। अली (अ0) के साथ रसूले इस्लाम (स0) के चचा हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब, ज़ुबैर बिनुल अव्वाम, सलमान, मिक़दाद, अबुज़र, अम्मार बिन यासिर और तमाम के तमाम बनी हाशिम थे। और सबसे ज़्यादा यह कि अली (अ0) के हाथ में वह तलवार थी जिसने इस्लामी जंगों की क़िस्मतें पलट दी थीं मगर अली (अ0) ने एहतेजाज तो किया मगर जंग न की। उन्होंने यह समझा कि वह अगर अपने हक़ के लिए जंग करेंगे तो वह उनकी ज़ाती हुकूमत की जंग समझी जाएगी जिसमें मुसलमान, मुसलमान को क़त्ल करेगा। इस्लाम और मुल्क टुक्ड़े–टुक्ड़े हो जायगा। इसलिए अली (अ0) ने अपने हक़ को

मुल्क, अक़ीदे और अवाम की सलामती के लिए कुर्बान कर दिया। अब अगर हम अली (अ0) की पैरवी करें तो हमारा तरीक़ा यह होगा कि हमें मुल्क की सलामती और फ़ाएदे का पहले और अपनी तरक़्क़ियों का ख़याल बाद में आयेगा।

मेरे ज़माने में लोग वही बातें सुन्ते हैं जो उनकी अपनी पार्टी वाले कहते हैं वह अपने कान मुख़ालिफ पार्टी और उनकी तक़ारीर की तरफ से बन्द कर लेते हैं चाहे वह लोग सच्ची बात ही क्यों न कह रहे हों। उन्हें तमन्ना होती है कि उनका उम्मीदवार जीत जाए चाहे वह झूठ ही क्यों न बोल रहा हो और दूसरा उम्मीदवार हार जाए चाहे वह सच ही क्यों न बोल रहा हो। इस जगह पर अली (अ0) की तालीम मेरी नज़र में जमहूरियत (लोगों) के लिए फायदेमन्द है और मुल्क के लिए भी। वक़्त वह है जब जंगे जमल लड़ी जा रही है, किसी ने पूछा ''मौला क्या ऐसा हो सकता है कि इतने बड़े–बड़े लोग बातिल पर हों?'' जवाब में अली (अ0) ने फरमायाः ''पहले यह जान लो कि सच्चाई क्या है फिर सच बोलने वाले अपने आप समझ में आ जाएँगे।''

मेरे ज़माने में एक इलेक्शन जीतने के बाद उम्मीदवार इसको फितरी समझता है कि वह अपनी अज़ीज़ों अपने दोस्तों और अपने मददगारों को नवाज़े चाहे इस क़िस्म का नवाज़ना मुल्क और अवाम के हुक़ूक़ को पामाल ही क्यों न करता हो इसके बरख़िलाफ अली की तालीम यह है कि ऐसा करना मुल्क से खुली–खुली ख़यानत है। मिसाल के तौर पर यह तारीख़ी वाक़ेआ सुनियेः

वक्त वह है जब अली (अ0) मुसलमानों के ख़लीफा हैं, हुकूमत के ख़ज़ाने के मालिक हैं। उस ख़ज़ाने से हर मुसलमान शहरी को उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ शहरिया मिलता है, अली के सगे भाई, अक़ील उनसे मिलने आते हैं और कुछ माल तलब करते हैं। अली (अ0) पूछते हैं कि क्या उनके हिस्से का शहरिया उनको नहीं मिला? अक़ील जवाब देते हैं कि वह अतिया तो उनको मिला मगर उनको इससे ज़्यादा ज़रूरत है। यह सुनने पर अली (अ0) क़म्बर को हुक्म देते हैं कि आग रौशन करो और जब क़म्बर की जलाई हुई आग भड़क उठती है तो अली (अ0) अक़ील को हुक्म देते हैं कि इसमें दाख़िल हो जाओ। अक़ील ताज्जुब करते हुए कहते हैंः ''क्या तुम इस आग से अपने भाई को जलाओगे?'' अली (अ0) जवाब देते हैंः और क्या तुम कल की आग से अपने भाई को जलाना नहीं चाहते? चूँकि यह ख़ज़ाना ख़ुदा का ख़ज़ाना है और माल अवाम का माल है!''

तलहा और ज़ुबैर रसूल (स0) के अस्हाब में बहुत मुम्ताज़ अस्हाब थे और उन लोगों में आगे–आगे थे जिन्होंने अली (अ0) की बैअत की थी। ख़ुफिया तौर पर उन्हें उम्मीद थी कि अली (अ0) ख़लीफा बनने के बाद तलहा को बसरे का और ज़ुबैर को कूफ़े का गवर्नर बनाएँगे। यह उम्मीद लिये हुए वह अपने चुने हुए ख़लीफ़ा से मिलने गये।

रात का वक़्त था अली (अ0) बैतुलमाल के हिसाब लिख रहे थे जब तलहा और ज़ुबैर ने अली (अ0) से कहा कि वह उनसे मिलने आए हैं अली (अ0) ने चिराग़ बुझा दिया और फ़रमाया कि यह चिराग़ बैतुलमाल के लिए लाए गए तेल से जल रहा था और मेरी और तुम्हारी बातचीत शख़्सी और ज़ाती होगी इसलिए मैंने यह चिराग़ बुझा दिया। तलहा और ज़ुबैर यह देखकर हैरत में पड़ गये और बिना फरमाइश और मद्दआ वापस चले गये।

□□□

ग़दीर..... तारीख़ का नाक़ाबिले फ़रामोश वाक़ेआ

तज़हीब नगरौरी

18 ज़िलहिज्जह 10 हि0 को रसूले अकरम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0) अपनी ज़िन्दगी का आख़री हज करके अज़ीम क़ाफ़ले के साथ मक्का से वापस आ रहे हैं क़ाफ़ेला धीरे–धीरे वापस लौट रहा है रास्ते में ग़दीर का अज़ीम मैदान पड़ता है जब क़ाफला यहाँ पहुँचता है बस फौरन फरिश्तों के सरदार हज़रत जिबरईले अमीन (अ0) आयत लेकर नाज़िल होते हैं और रसूले अकरम (स0) से फ़रमाते हैं कि ऐ मुहम्मद (स0)! ख़ुदा आप पर सलाम भेजता है और कहता है किः

''ऐ हमारे रसूल (स0)! जो कुछ (अली अ0 के बारे में) आपके परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल हुआ है उसे पहुँचा दें, अगर आपने ऐसा न किया तो गोया रिसालत का कोई काम ही नहीं किया''

इस आयत के मफ़हूम और ख़ास तौर पर आयत के लहजे को देखने के बाद मुरसले आज़म हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0) इसी ग़दीर के मैदान में रुक गए चूँकि आपके क़ाफ़ले में तक़रीबन सवा लाख मुसलमान थे इसलिए क़ाफ़ला काफ़ी बड़ा था और इस क़ाफ़ले में आगे रहने वाले लोग ग़दीर से गुज़र कर हजफा तक पहुँच गये थे और बाज़ अभी ग़दीरे ख़ुम के इलाक़े तक पहुँचे ही नहीं थे लिहाज़ा रसूले आज़म ने हुक्म दिया कि जो लोग आगे बढ़ गये हैं वह पीछे यानी ग़दीर तक वापस आ जाएँ और जो अभी पीछे हैं आए ही नहीं हैं उनका इन्तिज़ार करें ताकि वह सब एक ही जगह जमा हो जाए जब लोग एक साथ ग़दीर के मैदान में जमा हो गये तो पैग़म्बरे ख़ुदा (स0) ने चन्द ऊँटों के कजावों को इकटठा करवा कर मिंबर बनवाया और आप उस मिंबर पर मौलाए कायनात हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ0) को साथ लेकर तशरीफ़ ले गये और एक लम्बा खुतबा इरशाद फ़रमाया और मजमे से मुख़ातिब होकर कहा कि जिसका मैं मौला हूँ उसके यह अली मौला हैं परवरदिगार जो अली (अ0) को दोस्त रखे उसे तू भी दोस्त रख और जो अली (अ0) से दुश्मनी रखे उस से तू भी नाराज़ रह......... इसके बाद मुसलमानों ने मौलाए काएनात को मुबारकबाद भी पेश की ख़लीफ–ए–दोएम उमर ने भी मौलाए काएनात से कहा कि ऐ अली मुबारक हो आप आज से मुसलमानों के अमीर हो गये।

लेकिन अफसोस कि रसूले करीम (स0) की आँख बन्द होते ही नाम नेहाद मुसलमानों ने अपने वादे को भुला दिया और ख़िलाफत का बाज़ार गर्म हो गया और अली (अ0) को ख़ुदा के अता किये हुए हक़ से महरूम रखा गया जिसके नतीजे में कितनी ज़्यादा ख़राबियाँ पैदा हुईं उनका ज़िक्र इस मुख़तसर मज़मून में करने की गुन्जाइश नहीं है मुख़तसर यूँ समझिये कि इस मारका आराई का आख़री नतीजा यज़ीद की ख़िलाफत थी जिसे इमाम हुसैन ने कर्बला के चटियल मैदान में शिकस्त दी और हर दिल पर इस्लामी हुकूमत क़ायम कर दी।

मैदाने ख़ुम से लेकर मैदाने कर्बला तक सब ने शिकस्त खाते देखा है दुश्मनी को

लेकिन आज जब इसी वाक़ेए को इस्लाम के अकसरियती फ़िरक़े के सामने बयान किया जाता है तो बाज़ इस वाक़ेए को मस्लहतन नज़रअन्दाज़ करने की नाकाम कोशिश करते हैं हालांकि इस वाक़ेए को ज़्यादातर अहलेसुन्नत के उलमा ने भी नक़्ल किया है और इस बात को

क़बूल करते हैं कि रसूले अकरम (स0) ने अपनी ज़िन्दगी में ख़ुदा के हुक्म से ग़दीरे ख़ुम में हज़रत अली (अ0) को अपना वसी व जानशीन मुक़र्रर फ़रमा दिया था। अहलेसुन्नत हज़रात के जिन आलिमों ने इस वाक़ए को अपनी किताबों में नक़्ल किया है उनमें से ख़ास–ख़ास लोगों के नाम कुछ इस तरह हैं।

1– तबरी (वफ़ात 310 हि0) ने ''किताबुल विलायह फ़ी तुरुक़े हदीसिल ग़दीर'' में।

2– हन्ज़ली राज़ी (वफ़ात 327 हि0)

3– महामली (वफ़ात 330 हि0) ने किताब ''अमाली'' में

4– हाफिज़ शीराज़ी (वफ़ात 407 हि0) ने किताब ''मा नज़ल फिल क़ुर्आन फी अमीरिल मोमिनीन'' में

5– इब्ने मरद्वैयह (वफ़ात 416 हि0)

6– सअ्लबी नीशापूरी (वफ़ात 427 हि0) ने ''अल–कश्फ वल बयान'' में।

7– अबुनईम अस्फहानी (वफ़ात 430 हि0) ने ''मा नज़ल मिनल क़ुर्आन फी अली'' में।

8– वाहिदी नीशापूरी (वफ़ात 468 हि0) ने ''अस्बाबुन्नुज़ूल'' में।

9– अबुसईद सजिस्तानी (वफ़ात 477 हि0) ने ''अलविलायह'' में।

10– हाकिम हस्कानी (वफ़ात पाँचवीं सदी के आख़िर में) ने ''शवाहिदुत्तन्ज़ील'' में।

11– इब्ने असाकर शाफ़ई (वफ़ात 571 हि0) ने ''अद्दुररुल मन्सूर'' और ''फत्हुल क़दीर'' की नक़्ल से।

12– नतन्ज़ी (वफ़ात छठी सदी हिजरी) ने ''अलख़साएसुल अलवियह'' में।

13– फख़्रे राज़ी (वफ़ात 616 हि0) ने ''अत्तफसीरुल कबीर'' में।

14– नसीबी शाफ़ई (वफ़ात 652 हि0)।

15– मूसली हम्बली (वफात 661 हि0) ने अपनी तफ़सीर में जिसका ज़िक्र ज़हबी ने ''तज़किरतुल हुफ्फाज़'' जि0–4 पे–243 में किया है और इसकी तारीफ़ की है।

16– अबु इस्हाक़ हमवीनी (वफ़ात 732 हि0) ने ''फराएदुस्सम्तैन'' में।

17– सैय्यद अली हमदानी (वफ़ात 786 हि0) ने ''मवद्दतुल क़ुरबा'' में।

18– इब्ने ऐनी हनफ़ी (वफ़ात 855 हि0) ने ''उम्दतुल क़ारी फी शरहि सहीहिल बुख़ारी जि–8 पे–584 में।

19– इब्ने सबाग़ मालिकी (वफ़ात 855 हि0) ने ''अलफ़ुसूलुल मुहिम्मह'' में।

20– निज़ामुद्दीन नीशापुरी (वफ़ात आठवीं सदी हिजरी) ने ''अस्साएरुद्दायर'' में।

21– कमालुद्दीन मीबदी (वफ़ात 908 हि0 के बाद) ने ''शरहे दीवाने अमीरुल मोमिनीन'' में।

22– जलालुद्दीन सुयूती (वफ़ात 911 हि0) ने ''अद्दुररुल मन्सूर'' में।

23– अब्दुल वहाब बुख़ारी (वफ़ात 932 हि0) ने अपनी तफसीर में।

24– सैय्यद जमालुद्दीन शीराज़ी (वफ़ात 1000 हि0) ने ''अरबईन'' में।

25– मुहम्मद महबूब आलम (वफ़ात ग्यारहवीं सदी हिजरी) ने ''तफसीरे शाही'' में।

26– क़ाज़ी शौकानी (वफ़ात 1250 हि0) ने ''फत्हुल क़दीर'' में।

27– आलूसी बग़दादी (वफ़ात 1270 हि0) ने ''रूहुल मआनी'' में।

28– मुहम्मद बदख़्शानी (वफ़ात 12वीं सदी हिजरी) ने ''मिफ्ताहुन्नजात'' में।

29– क़ुन्दूज़ी हनफी (वफ़ात 1293 हि0) ''यनाबीउल मवद्दत'' में।

30– शैख़ मुहम्मद अब्दहु मिस्री (वफ़ात 1333 हि0) नें ''अलमनार'' में।



इदारा

मुख्य समाचार

ईरानियों का अमरीकी सिफारतख़ाने पर क़ब्ज़े की बीसवीं सालगिरह के मौक़े पर मुज़ाहेरा

तेहरान। अमरीकी सिफ़ारतख़ाने पर क़ब्ज़े की 20वीं सालगिरह पर आज यहाँ हज़ारों ईरानियों ने मुज़ाहेरा करते हुए "अमरीका मुर्दाबाद" के नारे लगाए और एलान किया कि वह ईरान के न्युकिलियाई प्रोग्राम के सिलसिले में अमरीका के दबाव में नहीं आएंगे। याद रहे कि 4–नवम्बर 1997 ई0 को तेहरान में अमरीकी सिफ़ारतख़ाने पर क़ब्ज़ा किया गया था जिसकी याद में तलबा ने आज यह मुज़ाहेरा किया अमरीका ने 1980 ई0 में ईरान से सिफ़ारती ताल्लुक़ात ख़त्म कर लिये थे। इस वक़्त दोनों हरीफ़ों के दरमियान ईरान के न्युकिलियाई प्रोग्राम पर तनाज़ेआ है अमरीका का इल्ज़ाम है कि ईरान के न्युकिलियाई प्रोग्राम का मक़सद न्युकिलियाई हथियार बनाना है जबकि ईरान का दावा है कि उसके न्युकिलियाई प्रोग्राम के मक़सद पुरअम्न हैं।

ईरान सच बोल रहा है: महमूद अहमदी नेजाद

तेहरान। ईरान के राष्ट्रपति अहमदी नेजाद ने कहा है कि संयुक्त राष्ट की रिपोर्ट बताती है कि ईरान अपने न्युकिलियाई मन्सूबों के बारे में सच बोल रहा है। ख़बररसाँ एजेन्सी अरना के मुताबिक़ अहमदी नेजाद ने कहा है कि वह बैनुल अक़वामी न्युकिलियाई तवानाई एजेन्सी IAEA का ख़ैरमक़दम करते हैं।

उन्होंने कहा कि अब अमरीका को मालूम हो जाएगा ईरान सही था और मग़रिबी मुमालिक के दबाव के ख़िलाफ उसकी मुज़ाहेमत जाएज़ थी। याद रहे कि ईरान अपने न्युकिलियाई प्रोग्राम के बारे में शुरु से ही कह रहा था कि उसका न्युकिलियाई प्रोग्राम पुरअम्न मक़सद के लिए है।

इमामबाड़ा शाहनजफ लखनऊ में बिलातफ़रीक़े मज़ाहिब हज़ारों इन्सानों से मौलाना कल्बे सादिक़ का ख़िताब

लखनऊ। इमामबाड़ा शाहनजफ़ में गुज़िश्ता कई सालों से मुफक्किरे इस्लाम डाक्टर मौलाना सै0 कल्बे सादिक़ साहिब क़िब्ला तीन रोज़ा प्रोग्राम में किसी मुक़र्ररह मौज़ू पर मुसलमानों और ग़ैरमुस्लिमों के मिले जुले हज़ारो के मजमे को ख़िताब करते हैं। जिसमें हर मज़हब के उलमा और दानिश्वरों का अच्छा ख़ासा मजमा होता है। इस साल इसी प्रोग्राम में पहले दिन हज़ारों के मजमे से "इस्लाम पसमाँदा तबक़े की आस" के मौज़ू पर ख़िताब करते हुए मौलाना ने कहा कि वैसे तो हर मज़हब अच्छा है लेकिन इस्लाम की कुछ ख़ासियतें हैं इस्लाम वह मज़हब है जो पेड़–पौधों और ज़मीन तक पर ज़ुल्म करने की इजाज़त नहीं देता है। इस्लाम एक पेड़ काटना तो दूसरी बात पेड़ की एक पत्ती तक को बिलावजह मसलने की इजाज़त नहीं देता है। उन्होंने कहा कि जो इस्लाम एक पत्ती तक को बिला सबब मसलने की इजाज़त नहीं देता वह इन्सानों पर ज़ुल्म होते हुए किस तरह देख सकता है।

इसी प्रोग्राम में एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि हमारे लिए पैग़म्बरे अकरम हज़रत मुहम्मद मुस्तफा स0 नमून–ए–अमल हैं न कि अल–क़ाएदा और तालिबान, याद रहे कि यह प्रोग्राम अभी आज और कल यानी 17 और 18 नवम्बर दो दिन और चलेगा।

तबसेरा

डाक्टर अज़ीम अमरोहवी साहिब, देहली

लखनऊ। मासिक ''शुआ–ए–अमल'' मेरे भाई सै0 जलाल हैदर नक़वी के ज़रिये एक बार देखने का मौक़ा मिला था। सबसे पहले तो नाम ने ही बहुत मुतास्सिर किया था। क्योंकि इल्म, अदब और मज़हब की तरग़ीब दिलाने वाले रसाएल व जराएद तो अक्सर नज़र से गुज़रते रहे हैं लेकिन इसका नाम सुनते ही अमल की किरन रगों में दौड़कर ख़ून में हरारत पैदा कर देती है। मैं समझता हूँ कि क़ौम की क़यादत मिंबर से हो या किसी स्टेज से, रसाएल से हो या किसी तर्जुमान की शक्ल में वह अमल की राह पर लगाने वाली क़यादत होनी चाहिए। मौलाना कल्बे जवाद साहब क़िब्ला की शख़सियत का भी यही वह रुख़ है जिससे मैं समझता हूँ कि आज पूरी क़ौम मुतास्सिर है और हर हक़ गो को उनकी अमली ख़िदमात का एतराफ़ करना चाहिए सिर्फ औक़ाफ़ के सिलसिले में ही अगर हम देखें तो मौसूफ ने बहुत कम वक़्त में बहुत ज़्यादा ख़िदमात अन्जाम देकर औक़ाफ की हिफाज़त की है और उन्हें एक नई ज़िन्दगी अता फ़रमाई है। क़ौम पर इनका यह वह बड़ा एहसान है कि जो तारीफ़ के लायक़ है और याद रखा जाने वाला है।

बहरहाल मौलाना मौसूफ़ के ख़ानवाद–ए–अज़ीम से मुताल्लिक़ ''शुआ–ए–अमल'' ने जो खुसूसी शुमारे यानी ''ख़ानदाने इज्तेहाद नम्बर'' छापे हैं, वह न सिर्फ देखने लायक़ और नज़र का आईना बने बल्कि उन्होंने दिल को भी मुनव्वर किया। कैसी–कैसी शख़सियात, क्या–क्या ख़िदमात ऐसा लगता है कि हर शख़्स इल्म का एक समन्दर था और वह इल्म जिन तसानीफ़ में समोया है वह मज़हबे जाफ़रिया का ऐसा अनमोल ज़ख़ीरा है जिसकी मिसाल हमारी मिल्लत की तारीख़ में नहीं मिल सकती हक़ीक़त तो यह है कि इस ख़ान्दान की इल्मी, मज़हबी और अदबी ख़िदमात को आपने बड़े सलीक़े और ख़ुश उस्लूबी से चन्द शुमारों में जिस तरह पेश किया है वह आप ही का हिस्सा है। वैसे इस ख़ानदान की ख़िदमात के बयान के लिए एक पूरी लाइब्रेरी लिखने की ज़रूरत पड़ेगी, क्योंकि यहाँ तो हर एक पैकरे नूरे इल्म है। इतने आफताबे इल्म हैं कि निगाहें चौंधिया जाती हैं। इतने मीनार–ए–इल्म हैं कि अक़्ल हैरान रह जाती है और इतने इल्म के हिमालय हैं कि उन्हें देखने में सरों की टोपियाँ गिर जाएँ। इल्म के हर समन्दर में ऐसे–ऐसे मोती हैं जो आँखों में रौशनी बढ़ा दें।

इस ख़ानवाद–ए–इल्म व अदब और मज़हब की गराँक़द्र ख़िदमात अजीबो ग़रीब हैं अगर इसका भरपूर जायज़ा लिया जाए और ग़ौर से मुताला किया जाए तो इन्सानी अक़्ल दाँतों में उँगलियाँ दबा ले। आज क़ौम की नई नसलों को ज़रूरत थी कि ऐसे क़बील–ए–मलाएक और गिरोहे क़ुद्सियाँ से पहचनवाया जाए जो हमारे लिए फ़ख़्र का सामान भी है और एक बड़े जज़्बे की बेदारी का सबब भी। और यही काम ''शुआ–ए–अमल'' ने अन्जाम दिया है।

इस सिलसिले में एक गुज़ारिश करना चाहता हूँ कि कभी एक शुमारा ऐसा भी छापें जिसे ''तसानीफे ख़ानदाने इज्तेहाद'' का नाम दिया जा सके जिसमें आपके एक तफसीली इदारिये के अलावा एक फेहरिस्त मुसन्निफ की तसानीफ की हो और इसमें बिबलोग्राफी पेश की जाए। जो एक तफसीली केटेलाग (Catalogue) की शक्ल में हो क्योंकि इतने साहेबाने तसानीफ और अहलेक़लम किसी भी ख़ानवादे में नहीं हुए।

मुझे ज़ाती तौर पर हज़रत फ़ज़ल नक़वी (जो मेरे क़यामे लखनऊ के दौरान उस्ताद भी थे) हज़रत मेहदी नज़्मी, हज़रत नाज़िर ख़ैय्यामी, हज़रत माहिर लखनवी और हज़रत सालिक लखनवी से क़ुरबत का शरफ़ रहा है। हर शख़्स मजमुअए कमालात था।

बहरहाल इन ख़ुसूसी शुमारों की इशाअत पर आप बेहद मुबारकबाद के मुस्तहक़ हैं। इन बुज़ुर्गों की अरवाहे मुक़द्दसा आपको इस काम पर दुआएँ दे रहीं होंगी। मेरे पास तो इस तारीफ के भी चन्द अलफ़ाज़ नहीं हैं जो हक़्क़े तौसीफ अदा कर सकें। □□□